परमात्म ऊर्जा

अपने को विघ्न विनाशक समझते हो? कोई भी प्रकार का विघ्न सामने आवे तो सामना करने की शक्ति अपने में अनुभव करते हो? अर्थात् अपने पुरूषार्थ से अपने आपको बापदादा के व अपनी सम्पूर्ण स्थिति के समीप जाते अनुभव करते हो व वहाँ का वहाँ ही रूकने वाले अपने को अनुभव करते हो? जैसे राही कब रूकता नहीं है, ऐसे ही अपने को रात के राही समझ चलते रहते हो? सम्पूर्ण स्थिति का मुख्य गुण प्रैक्टिकल कर्म में व स्थिति में क्या दिखाई देता है व सम्पूर्ण स्थिति का विशेष गुण कौन-सा होता है, जिस गुण से यह परख सको कि अपनी सम्पूर्ण स्थिति के समीप हैं व दूर हैं? अभी एक सेकण्ड के लिए अपनी सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होते हुए फिर बताओ कौन-सा विशेष गुण सम्पूर्ण स्टेज को व स्थिति को प्रत्यक्ष करता है। सम्पूर्ण स्टेज व सम्पूर्ण स्थिति जब आत्मा की बन जाती है तो इसका प्रैक्टिकल कर्म में क्या गायन है? समानता का। निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुःख सभी में समानता रहे, इसको कहा जाता है सम्पूर्णता की स्टेज। दुःख में भी सूरत व मस्तक पर दुःख की लहर के बजाए सुख व हर्ष की लहर दिखाई दे। निन्दा सुनते हुए भी ऐसे अनुभव हो कि यह निन्दा नहीं, सम्पूर्ण स्थिति को परिपक्व करने के लिए यह महिमा योग्य शब्द हैं, ऐसी समानता रहे। इसको ही बापदादा के समीपता की स्थिति कह सकते हैं। ज़रा भी अन्तर ना आवे, ना दृष्टि में, ना वृत्ति में। यह दुश्मन है व गाली देने वाला है, यह महिमा करने वाला है, यह वृत्ति न रहे। शुभचिंतन आत्मा की वृत्ति व कल्याणकारी दृष्टि रहे। दोनों प्रति एक समान, इसको कहा जाता है समानता। समानता अर्थात् बैलेन्स ठीक ना होने के कारण अपने ऊपर बाप द्वारा ब्लिस नहीं ले पाते हो। बाप ब्लिसफुल है ना। अगर अपने ऊपर ब्लिस करनी है व बाप की ब्लिस लेनी है तो इसके लिए एक ही साधन है - सदैव दोनों बातों का बैलेन्स ठीक रहे। जैसे स्नेह और शक्ति दोनों का बैलेन्स ठीक रहे तो अपने आपको ब्लिस व बाप की ब्लिस मिलती रहेगी। बैलेन्स ठीक रखने नहीं आता है। जैसे वह नट होते हैं ना। उनकी विशेषता क्या होती है? बैलेन्स की। बात साधारण होती है लेकिन कमाल बैलेन्स की होती है। खेल देखा है ना नट का? यहाँ भी कमाल बैलेन्स ठीक रखने की। बैलेन्स ठीक नहीं रखते हो। महिमा सुनते हो तो और ही नशा चढ़ जाता है, ग्लानि से घृणा आ जाती। वास्तव में ना महिमा का नशा, ना ही ग्लानि से घृणा आनी चाहिए। दोनों में बैलेन्स ठीक रहे, तो फिर स्वयं ही साक्षी हो अपने आपको देखो तो कमाल अनुभव होगी। अपने आपसे सन्तुष्टता का अनुभव होगा, और भी आपके इस कर्म से सन्तुष्ट होंगे। तो इसी पुरूषार्थ की कमी होने के कारण बैलेन्स की कमी कारण ब्लिसफुल लाइफ जो होनी चाहिए वह नहीं है।

कथा सरिता

अपनी कमी को तलाशें और खुद को बेहतर बनायें

एक गांव में एक मूर्तिकार रहा करता था। वह काफी खूबसूरत मूर्तियां बनाया करता था और इस काम से बहुत अच्छा कमा भी लेता था। उसे एक बेटा हुआ। उस बच्चे ने बचपन से ही अपने पिता के पास मूर्तियां बनानी शुरू कर दी। धीरे-धीरे उसने मूर्तियां बनाना सीख लिया। अब वह बहुत अच्छी मूर्तियां बनाया करता था और पिता अपने बेटे की कामयाबी पर बहुत खुश था और गर्व महसूस करता था। लेकिन जब वह भी मूर्तियां बनाता, हर बार बेटे की मूर्तियों में कोई न कोई कमी निकाल दिया करता था।

वह कहता था- "बहुत अच्छा किया है बेटा, लेकिन अगली बार इस कमी को दूर करने की कोशिश करना।" बेटा भी कोई शिकायत नहीं करता। वह अपने पिता की सलाह पर अमल करते हुए अपनी मूर्तियों को और बेहतर करता रहता। इस लगातार सुधार से बेटे की मूर्तियां अपने पिता से भी अच्छी बनने लगी और ऐसा समय भी आ गया कि लोग बेटे की मूर्तियों को बहुत पैसा देकर खरीदने लगे। जबकि उसके पिता की मूर्तियां पहली वाली कीमत पर ही बिकती रहीं।

पिता अभी भी बेटे की मूर्तियों में कमियां निकाल ही देता था। लेकिन बेटे को अब यह अच्छा नहीं लगता कि कोई उसकी मूर्तियों में कमियां निकाले। और वह बिना मन के कमियों को स्वीकार करता था लेकिन फिर भी अपनी मूर्तियों में सुधार कर ही देता था।

एक दिन ऐसा भी आया कि जब बेटे के सब्र ने जवाब दे दिया। पिता इस बार जब कमियां निकाल रहा था तो बेटा बोला, आप तो ऐसे कहते हैं कि जैसे आप बहुत बड़े मूर्तिकार हो। अगर आपको इतनी समझ होती तो आपकी मूर्तियां इतनी कम दाम में नहीं बिकती। मुझे नहीं लगता कि अब आपकी सलाह कि मुझे ज़रूरत है। मेरी मूर्तियां बिल्कुल ठीक हैं।

पिता ने जब बेटे की यह बात सुनी तो उसने अपने बेटे को सलाह देना और उसकी मूर्तियों में कमियां निकालना बंद कर दिया। कुछ महीने तो वह लड़का खुश रहा। लेकिन फिर उसने यह महसूस किया कि लोग अब उसकी मूर्तियों की इतनी तारीफ नहीं करते हैं जितनी पहले किया करते थे। और उसकी मूर्तियों के दाम बढ़ना भी बंद हो गए और उसकी बिक्री बहुत कम होने लगी।

शुरू में तो बेटे को कुछ समझ नहीं आया लेकिन फिर वह अपने पिता जी के पास गया और उनसे इस समस्या के बारे में सारी बात बताई। उसके पिता जी ने बेटे की बातों को बहुत शांति से सुना जैसे कि उन्हें पहले से पता था कि एक दिन इस प्रकार की सिचुएशन आएगी।

बेटे ने भी इस बात को नोटिस किया और पूछा- क्या आप जानते थे कि ऐसा होने वाला है! पिता ने हाँ में उत्तर दिया और बोला आज से कई साल पहले मैं भी इस हालात से टकराया था।

बेटे ने सवाल किया- तो फिर आपने मुझे समझाया क्यों नहीं? पिता जी ने जवाब दिया क्योंकि तुम समझना नहीं चाहते थे। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी जितनी अच्छी मूर्तियां मैं नहीं बनाता हूँ। यह भी हो सकता है कि मूर्तियों के बारे में मेरी सलाह गलत हो। ऐसा भी नहीं है कि मेरी सलाह की वजह से कभी तुम्हारी मूर्ति बेहतर बनी हो। लेकिन जब मैं तुम्हारी मूर्तियों में कमियां दिखाता था, तब तुम अपनी बनाई मूर्तियों से संतुष्ट नहीं होते थे। और खुद को बेहतर करने की कोशिश करते थे। और वही बेहतर होने की कोशिश ही तुम्हारे कामयाब होने का एक बड़ा कारण था। लेकिन जिस दिन तुम अपने काम से संतुष्ट हो गए और तुमने यह भी मान लिया कि अब इसमें और बेहतर होने की कोई गुंजाइश ही नहीं है तब तुम्हारी कामयाबी रूक गई। लोग हमेशा तुमसे बेहतर की उम्मीद रखते हैं और यही कारण है कि अब तुम्हारी मूर्तियों के लिए तुम्हारी तारीफ नहीं होती है और ना ही उनके लिए तुम्हें ज़्यादा पैसे मिलते हैं।

बेटा थोड़ी देर चुप रहा और फिर उसने सवाल किया कि अब मुझे क्या करना चाहिए? पिता ने एक वाक्य में जवाब दिया - असंतुष्ट होना सीख लो। मान लो कि तुम में हमेशा बेहतर होने की गुंजाइश बाकी है। यही एक बात तुम्हें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहेगी। तुम्हें हमेशा बेहतर बनाती रहेगी।

सीख : इस संसार में कोई भी इंसान किसी भी काम में 100प्रतिशत उत्तम नहीं है। हर इंसान में कुछ न कुछ कमी ज़रूर है। हमें इस कमी को अपने अंदर तलाश करनी चाहिए। और इसे बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिए। तभी जाकर हम अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

रतलाम-म.प्र.। रतलाम राजीव गांधी सिविक सेंटर पर 76वें गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रीय ध्वजारोहण करने के पश्चात् वार्ड पार्षद मनीषा चौहान, राजपूत समाज अध्यक्ष विजय सिंह चौहान, ब्र.कु. मनोरमा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

रामगंज मंडी-राज.। गणतंत्र दिवस के अवसर पर सी.आई. मनोज सिंह के आगमन पर कार्यक्रम के पश्चात् ईश्वरीय प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. शीतल।

ओलपाड-सूरत(गुज.)। एनडीआरएफ के जवानों को 'सकारात्मक विचारों द्वारा जीवन को श्रेष्ठ कैसे बनाएं' के बारे में सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में इंस्पेक्टर भरत मौर्य व अन्य जवान साथ स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. धर्मिष्ठा।

आमेट-राज.। ब्रह्मा बाबा के 56वें पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात चित्र में जैन समाज के अध्यक्ष एवं पर्यावरण के डेप्युटी डायरेक्टर ज्ञानेश्वर मेहता, ब्र.कु. पूनम एवं ब्र.कु. गौरी।

भिलाई-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के अंतर्दिशा भवन के पीस ऑडिटोरियम प्रांगण में 76वें गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रीय ध्वजारोहण के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु. प्राची, ब्र.कु. अश्विनी,झारसुगुडा, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. स्नेहा तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।